अनार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 162–164

अनार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग और उनका प्रबंधन

रवि कुमार रजक[1], श्रेतांक सिंह[2] एवं ओम नारायण[3]

[1] शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2]शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग
[3]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

भारत में अनार की खेती मुख्य रूप से महाराष्ट्र में की जाती है। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आन्द्रप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, कर्नाटक, गुजरात में छोटे स्तर में इसके बगीचें देखे जा सकते हैं। और इसका रस स्वादिष्ट तथा औषधिय गुणों से भरपूर होता है। और अनार उपोष्ण जलवायु का पौधा है। यह अर्द्ध शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से उगाया जा सकता है। फलों के विकास एवं पकने का समय गर्म एवं शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। लम्बे समय तक उच्च तापमान रहने से फलों में मिठास बढ़ती है। और आर्द्र जलवायु से फलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। एवं फफूँद जनक रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसकी खेती समुद्रतल से 500 मीटर सें अधिक उँचे स्थानो पर की जा सकती है। और अनार विभिन्न प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है। परन्तु अच्छे जल विकास वाली रेतीली दोमट मिट्टी सर्वोतम होती है। फलों की गुणवत्ता एवं रंग भारी मृदाओं की अपेक्षा हल्की मृदाओं में अच्छा होता है।

अनार के प्रमुख कीट

अनार की तितली (*विरोकोला आइसोक्रेट्स*)–

पहचान– यह अनार का सबसे गंभीर कीट है। और इस कीट की पूर्ण विकसित सूंड़िया 17–20 मि. मी. लम्बी गहरे भूरे रंग की होती है। और इसके शरीर पर छोटे–छोटे बाल एवं सफेद रंग के धब्बे पाए जाते है। इसकी वयस्क नर तितली मखमली नीली चमकीली होती है। जबकि मादा तितली नारंगी रंग की होती है। तथा इसकी लंम्बाई पंख फैलाने के बाद 40–50 मि.मी. तक होती है।

क्षति– इस कीट की सूंड़िया अनार के फलों के अन्दर घुसकर अन्दर ही अन्दर अधपके दानों को खाते है। और एक फल के अन्दर 7–8 सूंड़िया घुसी रहती है। और इन सूंड़ियों द्वारा फल के अन्दर ही अन्दर खाने एवं इसके मलमूत्र से फलों में बैक्टीरिया एवं कवकों का आक्रमण भी होता है। जिसके बाद फलों में सड़न उत्पन्न होती है। और ग्रसित फल पेड़ से गिर जाते है। एवं इनमें खराब सी बदबु आती है। और यह कीट अनार का एक विनाशकारी कीट है। जो कि 40–90 प्रतिशत तक फलों को खराब कर सकता है।

कीट नियंत्रण के उपाय–

- ❖ प्रभावित फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
- ❖ खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें ।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबाल कर ठण्डा कर लें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

तना छेदक–

इस कीट का वैज्ञानिक नाम *जाइलोबोरस स्पी.* है। और इस कीट की इल्लियॉ शाखाओं में छेद बनाकर अंदर ही अंदर खाकर खोखला करती है शाखाएँ पीली पड़कर सूख जाती हैं।

कीट नियंत्रण के उपाय–

- ❖ क्षतिग्रस्त शाखाओं को काट कर इल्लियों सहित नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ पूर्ण रूप से प्रभावित पौधों कों जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ कीट के प्रकोप की अवस्था में मुख्य तने के आस–पास क्लोरोपायरीफास 2.5 मिली. प्रति लीटर पानी ट्राईडेमार्फ 1 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर ड्रेन्चिग दें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए अग्नि अस्त्र का प्रयोग करें। जो इस प्रकार से बनाया जाता है। इसमे 5 किलोग्राम नीम की पत्ते लें, और 20 लीटर देशी गाय का गौमूत्र लें, और फिर तम्बाकू के पत्ते या फिर डंठल या पिसा हुआ तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम लें, और 500 ग्राम तीखी मिर्च की चटनी लें, और फिर 500 ग्राम लहसुन की चटनी लें, इन सभी चीजो को धीमी आंच पर एक उबाल आने तक उबालें। और फिर इस मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखें और इसके बाद कपड़े से छानकर 6 से 8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल पर छिढ़काव करें। लेकिन इस बने हुए अग्नि अस्त्र को 3 माह के अन्दर ही प्रयोग कर लें।

छाल बेधक इल्ली–

यह कीट गण लेपिडोप्टेरा के अंतर्गत आता है। और यह आम, अमरूद, अनार, आंवला, नीबू, लीची, लोकाट, चीकू तथा बेल आदि में नुकसान पहुंचाता है। और यह उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, पंजाब आदि प्रान्तो में मिलता है।

क्षति के लक्षण– इस कीट की सूंड़ी अवस्था हानिकारक होती है। और प्रारंभ में यह कीट पेड़ की छाल को खरोच कर खाती है तथा बाद में तने, शाखाओं विशेषकर उनके जोड़ वाले स्थान में छेद करके अंदर प्रवेश कर जाती है। और यह दिन के समय तने पर बनी हुई सुरंगों या बुनी हुई जाल में छिपी रहती हैं और रात्रि के समय सक्रिय रहती हैं। सूंड़ी रात्रि के समय सुरंग अथवा छेद के पास छाल को खाती हैं तथा खाई हुई छाल के छोटे–छोटे टुकड़ों एवं विष्ठा तथा चिपचिपे पदार्थ से लगभग 20 से 30 सेंटीमीटर लंबी तथा 2.5 सेंटीमीटर चौड़ी भूरे रंग की रिवन की भांति जाली बनाती हैं। और यह इन जालों के अंदर छिपकर तने की कोमल लकड़ी तथा खाद्य वाहिनियों को कुतर कुतर कर खाती हैं जिससे सुरंग बनती है फलस्वरुप तने के ऊपरी भागों में पोषक तत्वों का प्रवाह रुक जाता है और तने कमजोर हो जाते हैं एवं शाखाएं सूख जाती हैं तथा ग्रसित बृक्षों में फल कम लगते हैं और कीट का अत्यधिक प्रकोप होने पर पूरा का पूरा पौधा ही सूख जाता है। और इस कीट का आक्रमण पुराने वृक्षों पर अधिक होता है। यह देखा गया है कि इसका प्रकोप काली मिट्टी तथा वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक होता है और इससे 42 से 46 प्रतिशत तक पौधे इससे ग्रसित पाए गए हैं।

कीट नियंत्रण के उपाय–

- ❖ तनों एवं शाखाओ से रिबन जाली को अलग कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ तनों और शाखओं की सुरंग में नुकीले तार को डालकर सूंड़ी को मार देना चाहिए।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए एजाडिरेक्टिन (नीम का तेल) डालें। और यह नीम के बीज एवं गूदा के तत्वों पर आधरित तरल वानस्पतिक कीटनाशक हैं। और इसकी गन्ध एवं स्वाद कीडों को भगाती हैं, और खाने की अनिच्छा उत्पन्न करती हैं एवं जीवन चक्र को धीमा एवं प्रजननशीलता को कमजोर बनाकर अंडे तथा बच्चों की संख्या में कमी लती हैं। और नीम का तेल नुकसान पहुंचाने वाले गोलवर्म, तेलाचेपा (माहूं), सफेद मक्खियां, भ्रंग, फुदका, कटुआ सूंडी तथा फल बेधक सूंडी पर प्रभावशाली हैं। और खडी फसल में कीट नियंत्रण हेतु एजाडिरेक्टिन (नीम का तेल) 0. 15 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 लीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। और इसकी सेल्फ लाइफ एक वर्ष तक की होती हैं।
- ❖ सुरंग में पेट्रोल रूई में भिगोकर भर दें तथा उसे गीली मिट्टी से बंद कर दें।

अनार के प्रमुख रोग

अल्टरनेरिया फ्रूटः (*अल्टरनेरिया अल्टरनेटा*)

लक्षण– अनार के फलों पर छोटे–छोटे लाल भूरे गोलाकार धब्बे दिखाई देते है। और जैसे–जैसे रोग बढ़ता है ये धब्बे आपस में जुड़कर बड़े धब्बे

बना लेते हैं और फल सड़ने लगते हैं। और फिर फल प्रभावित होते हैं जो पीले पड़ जाते हैं और खाने के लिए अयोग्य हो जाते हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय–

- ❖ सभी प्रभावित फलों को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ प्रभावित फलों को उखाड़ कर बाहर फेंक देना चाहिए।
- ❖ मैंकोजेब (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करने से रोग पर प्रभावी नियंत्रण होता है।

एन्थ्रेक्नोजः

(कोलेटोट्राइकम ग्लियोस्पोरियोइड्स)–

पीले आभामंडल के साथ छोटे नियमित या अनियमित सुस्त बैंगनी या काले पत्तों के धब्बे के रूप में दिखाई देता है। और पत्तियाँ पीली होकर गिरने लगती हैं। इसके लक्षण फूलों पर भी दिखाई देते हैं। और कोमल और परिपक्व दोनों फलों पर धब्बे विकसित होते हैं जो शुरू में गोलाकार होते हैं, बाद में अनियमित, भूरे से गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं और फल को आंशिक रूप से या पूरी तरह से धँसे हुए केंद्रों से ढक देते हैं। और रोगग्रस्त भाग सूक्ष्म, काले बिंदुओं के साथ दिखाई देते हैं जो एसरवुल्ली का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह रोग अगस्त–सितंबर के दौरान गंभीर होता है जब उच्च आर्द्रता होती है और तापमान 20–27 डिग्री से. के बीच होता है। और इनोकुलम का प्राथमिक स्रोत संक्रमित पत्तियाँ हैं। इनोकुलम का द्वितीयक स्रोत पवन

जनित कोनिडिया है। यह आम, अमरूद और पपीता आदि को भी संक्रमित करता है।

रोग नियंत्रण के उपाय–

- ❖ कार्बेन्डाजिम/डाइफेनकोनाजोल या थियोफैनेट मिथाइल 0.25 मि.ली. प्रति लीटर का एक पखवाड़े के अंतराल पर छिड़काव प्रभावी पाया गया है।
- ❖ एन्थ्रेक्नोज रोग के खिलाफ डिफेनकोनाजोल 25 ईसी 1.0 मिली प्रति लीटर या प्रोक्लोरेज 45 ईसी 0.75 मिली प्रति लीटर का छिड़काव प्रभावी था।

बैक्टीरियल ब्लाइटः *(जैंथोमोनस एक्सोनोपोडिस)–*

पत्तियों पर एक से कई छोटे पानी से लथपथ, गहरे रंग के अनियमित धब्बों का दिखना जिसके परिणामस्वरूप गंभीर मामलों में समय से पहले पत्तियां गिर जाती हैं। और रोगजनक तने और शाखाओं को भी संक्रमित करता है। और फलों पर धब्बे गहरे भूरे रंग के अनियमित थोड़े उभरे हुए और तैलीय दिखाई देते हैं, जो गंभीर मामलों में एल–आकार की दरारों के साथ खुल जाते हैं। इनोकुलम का प्राथमिक स्रोत संक्रमित कटिंग है। इनोकुलम का द्वितीयक स्रोत हवा से होने वाली बारिश है। और लंबे समय तक लगातार रुक–रुक कर होने वाली बारिश, अनुकूल अधिकतम (29.4 से 35.6 डिग्री से.) और न्यूनतम तापमान (19.5 से 27.3 डिग्री से.) और सापेक्ष आर्द्रता (63 से 87 प्रतिशत) रोग के विकास और प्रसार के लिए अनुकूल पाए गए।

रोग नियंत्रण के उपाय–

- ❖ ताजा रोपण के लिए रोगमुक्त पौध का चयन करें।
- ❖ प्रभावित शाखाओं, फलों की नियमित रूप से छँटाई करें और जलाएँ
- ❖ छंटाई से पहले इस पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए।

प्रति लीटर पानी में 0. 5 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट या बैक्टिरिया नाशक 2.5 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइडा छिड़काव करें ।